International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मेवाड़ की धार्मिक संस्कृतियाँ: ऐतिहासिक विकास और समकालीन प्रथाएँ

रीना कुमारी[1], डॉ. दिलावर नबी भट्ट[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग, निम्स विश्वविद्यालय राजस्थान, जयपुर
[2]सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, निम्स विश्वविद्यालय, राजस्थान जयपुर

शोध सार

भारत के राजस्थान में स्थित ऐतिहासिक क्षेत्र मेवाड़ में समृद्ध और विविध धार्मिक संस्कृति है, जो अपने गौरवशाली अतीत और जीवंत परंपराओं से प्रभावित है। इस क्षेत्र का धार्मिक जीवन मुख्य रूप से हिंदू धर्म, जैन धर्म और कुछ हद तक बौद्ध धर्म से प्रभावित है। मेवाड़ के आध्यात्मिक परिदृश्य का केंद्र भगवान विष्णु जैसे देवताओं की पूजा है, जो राम और कृष्ण के अवतार हैं, और शिव, जिनके मंदिर पूरे क्षेत्र में प्रमुख हैं। मेवाड़ शाही परिवार ने, विशेष रूप से महाराणा प्रताप के शासनकाल में, इन धार्मिक प्रथाओं को संरक्षण और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैन धर्म ने भी मेवाड़ की धार्मिक संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। उदयपुर में उल्लेखनीय जैन मंदिरों का निर्माण, समुदाय के प्रभाव और भक्ति को रेखांकित करता है। क्षेत्र की बौद्ध विरासत, हालांकि कम प्रमुख है, प्राचीन अवशेषों और ऐतिहासिक संदर्भों में परिलक्षित होती है।मेवाड़ की धार्मिक संस्कृति की विशेषता भव्य मंदिरों, पवित्र त्योहारों और गहरे रीति-रिवाजों का मिश्रण है।

कूटशब्द:- मेवाड़, धार्मिक संस्कृति, ऐतिहासिक विकास, हिंदू धर्म, जैन धर्म, इस्लाम

परिचय

धर्म सामाजिक-सांस्कृतिक प्रणालियों की एक श्रृंखला है, जिसमें निर्दिष्ट व्यवहार और प्रथाएँ, नैतिकताएँ, विश्वास, विश्वदृष्टि, ग्रंथ, पवित्र स्थान, भविष्यवाणियाँ, नैतिकताएँ या संगठन शामिल हैं, जो आम तौर पर मानवता को अलौकिक, पारलौकिक और आध्यात्मिक तत्वों से जोड़ते हैं[1] हालाँकि इस बात पर कोई

[1]"धर्म - मेरियम-वेबस्टर द्वारा धर्म की परिभाषा" । मूल से 12 मार्च 2021 को संग्रहीत किया गया। 16 दिसंबर 2019 को लिया गया।

विद्वानों की सहमति नहीं है कि वास्तव में धर्म क्या है। विभिन्न धर्मों में ईश्वरीय, पवित्रता, आस्था,और एक अलौकिक प्राणी या प्राणियों से लेकर विभिन्न तत्व शामिल हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं।[2]धर्म मानव जीवन का सर्वव्यापक, वर्तमान और भविष्य है। यह आत्मा और ईश्वर, आत्मा और मन या कर्ता और प्राणी के बीच का शाश्वत संबंध है। संख्या दर्शन के अनुसार अज्ञान से ज्ञान और विवेक से धर्म (मोक्ष) उत्पन्न होता है। जहाँ तक धर्म की उत्पत्ति का प्रश्न है, कहा जाता है कि वेद ही धर्म के मूल स्रोत हैं। किसी भी समाज या स्थानीय लोगों के अध्ययन के लिए सबसे पहले उस स्थान के धर्म का अध्ययन किया जाता है। क्योंकि धर्म ही उस व्यक्ति या समाज का आधार है।

मेवाड़ में सदियों से विकसित हुई धार्मिक परंपराओं की समृद्ध परंपराएँ हैं। इस क्षेत्र की विशेषता हिंदू धर्म, जैन धर्म और इस्लाम के बीच एक अद्वितीय अंतर्संबंध है, जो विभिन्न ऐतिहासिक चरणों के माध्यम से एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में रहे हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं। मेवाड़ की धार्मिक संस्कृतियों का इतिहास 6वीं शताब्दी में गुहिलोत राजवंश से शुरू होता है[3]। इस प्रारंभिक काल में हिंदू धर्म की स्थापना एक प्रमुख धर्म के रूप में हुई, विशेष रूप से सिसोदिया राजपूतों के संरक्षण में। राणा कुंभा और राणा सांगा जैसे शासकों ने एकलिंगजी और अंबा माता जैसे हिंदू देवताओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे स्थानीय पूजा में उनका महत्व और मजबूत हुआ[4]।

मेवाड़ की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ राजपूत समाज की विशिष्टताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं और इस क्षेत्र की ऐतिहासिक विरासत को संजोए हुए हैं। मेवाड़, जो राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है, अपने समृद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के लिए जाना जाता है[5]। यहाँ पर इसके प्रमुख पहलुओं का वर्णन किया गया है:

हिन्दु धर्मकाविकास

प्राकृत और संस्कृत शिलालेखों के संग्रह में छपे कुछ शिलालेखों में मध्यकालीन मेवाड़ में प्रशासन, सामाजिक स्थिति और धर्म से संबंधित रोचक जानकारी है। धार्मिक इतिहास की दृष्टि से उदयपुर के निकट नाथा के मंदिर में नरवाहन (971 ई.) का एक विकृत शिलालेख दिलचस्प है। इसमें एकलिंग की पूजा का उल्लेख है और शंकर के आशीर्वाद का आह्वान किया गया है। [6]राजपूतों की धार्मिक जीवन में विष्णु के अवतार श्रीराम और श्रीकृष्ण की विशेष पूजा की जाती है। विशेष रूप से, श्री कृष्ण के प्रति

[2]वेरगोटे, ए. (1996) धर्म, विश्वास और अविश्वास। एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन, ल्यूवेन यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 16
[3]शर्मा, आर. (2012). मध्यकालीन राजस्थान: इतिहास और संस्कृति, राजस्थान हिस्टोरिकल सोसायटी, जयपुर।
[4]शर्मा, वी. (2014). मेवाड़ में जैन धर्म और हिंदू धर्म: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।मेवाड़ संस्कृति संस्थान,उदयपुर

[5]सिंह, पी. (2016). "मेवाड़ की सांस्कृतिक पहचान: परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण।" इंडियन जर्नल ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर, 12(1), 78-85
[6]बनर्जी ए सी (1945) साईडलइटस ऑद हिस्ट्री ऑफ़ मेडिवल मेवाड़. प्रोसेडिंगग्स ऑफ़ डी इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 146–150

उनकी भक्ति गहरी रही है, और राणा प्रताप जैसे प्रमुख राजाओं ने भी इस भक्ति को अपने शासनकाल में प्रमुखता दी।शिवलिंग और शिव मंदिरों की पूजा भी महत्वपूर्ण है। जैसे कि चित्तौड़गढ़ में स्थित विशाल शिव मंदिर और इसके आसपास के अन्य शिवालय।शिव गुहिलोतों के संरक्षक देवता हैं; इसलिए शैव धर्म को मेवाड़ का मूल धर्म माना जा सकता है। उदयपुर से लगभग छह मील उत्तर में एक घाटी में स्थित एकलिंग का मंदिर मेवाड़ में शैवों का सबसे महत्वपूर्ण मंदिर है। राणा शिव के दीवान या प्रतिनिधि हैं। जब वे मंदिर में जाते हैं तो वे उच्च पुजारी के कर्तव्यों का पालन करते हैं और आवश्यक अनुष्ठान करते हैं। यह अनोखी प्रथा संभवतः इस तथ्य से उत्पन्न हुई है कि राणाओं के पूर्वज ब्राह्मण थे।[7]चित्तौड़ (1274 ई.) में पाया गया एक शिलालेख शिव और गणपति को श्रद्धांजलि के साथ शुरू होता है। भर्तृभट्ट को शिव का भक्त बताया गया है, और नरवाहन का हृदय 'गौरी के स्वामी' (शिव) के साथ अपनी मित्रता से बहुत प्रसन्न था[8]। हालाँकि इस शिलालेख में शैव धर्म का बहुत प्रमुख स्थान है, लेकिन इसमें वैष्णव धर्म का भी अप्रत्यक्ष संदर्भ है। हमें बताया गया है कि गुहिल 'विष्णु के समान ही गौरवशाली था।'माउंट आबू के अचलेश्वर में पाया गया एक शिलालेख (1285 ई.) शिव, गणेश और हनुमान को नमस्कार के साथ शुरू होता है। हनुमान का संदर्भ बहुत दिलचस्प है, क्योंकि मेवाड़ में पाए गए किसी अन्य शिलालेख में इसका कोई सादृश्य नहीं है। भोज के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने 'लक्ष्मी के देवता' (विष्णु) की पूजा की थी और समर सिंह की तुलना विष्णु के वराह अवतार से की जाती है। एक ही शिलालेख में शिव, गणेश, हनुमान और विष्णु के ये संदर्भ दर्शाते हैं कि 13वीं शताब्दी के अंत में मेवाड़ में कोई सांप्रदायिक दुश्मनी नहीं थी। उदयपुर के निकट एकलिंग मंदिर में पाया गया एक शिलालेख (1429 ई.) गणपति, गिरिजा और अच्युत को प्रणाम करने से शुरू होता है, और 'भगवती भवानी' को सौभाग्य का स्रोत बताया गया है। शक्ति की पूजा के ये संदर्भ विशेष रूप से दिलचस्प हैं क्योंकि शिव की पत्नी का कोई भी पहले का संदर्भ अब तक नहीं मिला है। वही शिलालेख हमें बताता है कि मोकला ने द्वारकाधीश (कृष्ण) का एक मंदिर बनवाया था। इस शिलालेख में 'सेनानि' (सेनाओं का सेनापति) नामक अधिकारी का उल्लेख है। मारवाड़ के रानपुर में पाया गया एक शिलालेख राणा कुंभा को 'सांप जैसे म्लेच्छ राजाओं के भण्डार को नष्ट करने वाले गरुड़' के रूप में वर्णित करता है। वैष्णव धर्म में उनकी रुचि जयदेव के गीत-गोविंदम पर उनके द्वारा रचित रसिक-प्रिय नामक प्रसिद्ध टीका से स्पष्ट है। लेकिन धर्म ने उनके राजनीतिक विचारों को प्रभावित नहीं किया। यह शिलालेख हमें बताता है कि उनके पसंदीदा 'सामघपति' (तीर्थयात्रियों के समूह के नेता) धरणाक थे, जो 'जैन धर्म के सबसे उत्कृष्ट अनुयायी थे।' जिन्होंने जैन मंदिरों की मरम्मत और निर्माण करवाया था। हमें बताया जाता है

[7]ए.सी.बैनरजी, राजपूत अध्ययन, गुहिलोतों का प्रारंभिक इतिहास।

[8]काले, एम. (1990)। भर्तृहरि और भारतीय साहित्य पर उनका प्रभाव,साहित्य अकादमी, दिल्ली

कि इस पवित्र जैन ने 'प्रसिद्ध अहमद, सुल्तान के फरमान के साथ तीर्थयात्राएँ कीं।' इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस 'प्रसिद्ध सुल्तान' की पहचान गुजरात के सुल्तान अहमद शाह से की जानी चाहिए। उनके धार्मिक सहिष्णुता का यह संदर्भ विशेष रूप से विन्सेंट स्मिथ के कथन के मद्देनजर दिलचस्प है कि वह 'काफिरों से लड़ने और उनके मंदिरों को नष्ट करने में उत्साही थे।'[9]

उदयपुर के पास पाए गए एक शिलालेख में गणेश, शिव, शंकर, महेश्वर, अच्युत, धुरजाति, पशुपति की पत्नी, पार्वती, उमा और लक्ष्मी के स्वामी का उल्लेख है। शिव का बार-बार उल्लेख (विभिन्न नामों के तहत) निस्संदेह यह दर्शाता है कि राणा कुंभा के दिनों में भी मेवाड़ में शैव धर्म सबसे प्रमुख धर्म था। इस शिलालेख में वैष्णव धर्म शक्ति की पूजा (विभिन्न नामों के तहत) की तुलना में कम प्रमुख है। वैष्णव धर्म के संबंध में, यह ध्यान देने योग्य है कि इस शिलालेख में राणा लक्षसिंह ने वैष्णव धर्म का उल्लेख किया है। कहा जाता है कि उसने पवित्र तीर्थ गया को मुक्त कराया था "जहाँ क्रूर शक (राजाओं) ने कथाओं, पुराणों और स्मृति सिद्धांतों को बेकार कर दिया था।" काठियावाड़ में सतरुंजय पहाड़ियों पर पाया गया एक शिलालेख हमें बताता है कि राणा रत्न सिंह के शासनकाल में एक कर्मा सिंह, जो 'सभी व्यापारियों में प्रमुख और बुद्धिमान था,' 'राज्य के प्रशासन का बड़ा बोझ उठाता था।' वह राणा का नियमित पदाधिकारी था या केवल एक गोपनीय सलाहकार। उसने बहादुर शाह के शासनकाल में गुजरात राज्य के भीतर स्थित आदिश्वर के मंदिर की मरम्मत की। इससे पता चलता है कि बहादुर शाह ने अहमद शाह की उदार परंपरा को जारी रखा। मारवाड़ के सादड़ी में मिले एक शिलालेख में राणा अमर सिंह के शासनकाल में एक जैन मंदिर के निर्माण का उल्लेख है। इसमें 11 पत्नियों द्वारा अपने पति की चिता पर खुद को जलाने का मामला दर्ज है। यह संभवतः मेवाड़ में सती का सबसे पहला अभिलेखीय संदर्भ है। मेवाड़ में सती का अंतिम ज्ञात मामला 1861 में हुआ था, जब राणा सरूप सिंह की एक उपपत्नी को प्राचीन प्रथा का पालन करने के लिए राजी किया गया था।[10]

राम राजसिंह के शासनकाल के दो शिलालेख, जो वास्तव में रिनछोड़ नामक पंडित द्वारा रचित राजप्रसस्ति नामक पुस्तक से कॉपी किए गए थे, गणेश और कृष्ण को प्रणाम के साथ शुरू होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि औरंगजेब द्वारा मथुरा के विनाश के समय राजसिंह मेवाड़ में कृष्ण की पवित्र प्रतिमा लाए, जिसकी उस शहर में सदियों से पूजा की जाती रही थी, और इसे उदयपुर से 22 मील उत्तर पूर्व में नाथद्वारा में स्थापित किया। टॉड कहते हैं कि कृष्ण के लिए उपहारों की संख्या बहुत अधिक थी।

[9]ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ. 268।
[10]एर्स्किन, रापुटाना गजेटियर, खंड II A, पृ. 26-27 ।

श्रीनाथजी के भक्त और पूजा की विशेष परंपराएँ हैं। श्रीनाथजी, जिन्हें बालरूप में पूजा जाता है, वल्लभाचार्य संप्रदाय के प्रमुख देवता हैं और उनके मंदिर (जैसे कि नाथद्वारा का मंदिर) एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हैं।कृष्ण भक्ति की भावना से जुड़े भजन, कथाएँ और रासलीला के आयोजन मेवाड़ की सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा हैं।

हिंदू मंदिर और तीर्थ स्थल

जगदीश मंदिर (उदयपुर): जगदीश मंदिर, उदयपुर का एक प्रमुख हिंदू मंदिर है जो भगवान विष्णु को समर्पित है। यह मंदिर 1651 में महाराणा जगत सिंह द्वारा निर्मित हुआ था। मंदिर की वास्तुकला में विष्णु के दस अवतार (दशावतार) की मूर्तियाँ और अद्भुत उकेरे गए चित्र शामिल हैं। इसकी सुंदर स्थापत्य और नक्काशी इसे एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बनाती है। इसमें नागरा शैली की विशेषता देखी जाती है, जिसमें जटिल नक्काशी और उकेरे हुए चित्र शामिल हैं। जगदीश मंदिर में भगवान विष्णु की पूजा बड़े धूमधाम से की जाती है। मंदिर में प्रमुख त्योहारों के दौरान विशेष पूजा और समारोह आयोजित किए जाते हैं, जैसे कि दीवाली, रामनवमी, और कृष्णजन्माष्टमी। इन त्योहारों के दौरान मंदिर में भव्य सजावट, धार्मिक अनुष्ठान, और भजन कीर्तन होते हैं।

सप्तपुरुषा मंदिर (कुम्भलगढ़): यह मंदिर कुम्भलगढ़ किले में स्थित है और भगवान शिव को समर्पित है। कुम्भलगढ़ किला स्वयं भी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है। मंदिर की संरचना और स्थल की भव्यता इसे एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बनाती है। यहाँ शिवरात्रि जैसे त्योहारों पर विशेष पूजा और अनुष्ठान होते हैं। इस मंदिर का निर्माण प्राचीन काल में हुआ था, और यह अपने धार्मिक अनुष्ठानों और भव्य वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर के परिसर में भगवान शिव की एक प्रमुख प्रतिमा स्थापित है, जिसे भक्त श्रद्धा और भक्ति के साथ पूजते हैं। कुम्भलगढ़ किले की प्राचीरों के बीच स्थित इस मंदिर की वास्तुकला और शिल्प कला भारतीय स्थापत्य की उत्कृष्टता को दर्शाती है। यहाँ शिवरात्रि जैसे विशेष अवसरों पर भक्त बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं, और पूजा-अर्चना, हवन, और अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं।

मेवाड़ में जैन धर्म का विकास

जैन धर्म का प्रसार मेवाड़ में प्राचीन काल से ही शुरू हो गया था, लेकिन इसका प्रमुख विकास मध्यकालीन युग में हुआ। जैन व्यापारियों और तीर्थयात्रियों के माध्यम से इस धर्म का प्रभाव क्षेत्र में बढ़ा। राजपूतों और जैन धर्म के बीच घनिष्ठ संबंध थे। जैन धर्म की शिक्षाओं ने राजपूत समाज की कुछ सामाजिक और धार्मिक परंपराओं को प्रभावित किया। मेवाड़ में जैन धर्म को स्थापित करने में

आचार्य बंधन और अन्य जैन संतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे स्थानीय जनसंख्या को जैन धर्म की शिक्षाओं से परिचित कराने और उनका प्रचार करने में सक्रिय थे। मध्यकालीन काल में जैन धर्म का प्रसार हुआ, जिसने हिंदू धर्म के साथ-साथ अपना गढ़ पाया। रणकपुर और उदयपुर जैसे उत्कृष्ट जैन मंदिरों का निर्माण, इस क्षेत्र में जैन धर्म के वास्तुशिल्प और आध्यात्मिक योगदान को दर्शाता है[11]। इस युग को भक्ति आंदोलन द्वारा भी चिह्नित किया गया था, जिसने ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति पर जोर दिया, जिससे धार्मिक प्रथाओं को आम जनता के लिए अधिक सुलभ बनाया गया।

मेवाड़ के कई राजकुमारों और प्रमुखों ने जैन धर्म के प्रति अपनी आस्था प्रकट की और जैन तीर्थों और मंदिरों के निर्माण में योगदान दिया। टॉड कहते हैं कि मेवाड़ ने हमेशा जैनियों को शरण दी और कुछ राणाओं ने उन्हें विशेष विशेषाधिकार दिए।[12] नागदा में मिले एक शिलालेख (1438 ई.) में उस स्थान पर जैन मंदिर के निर्माण का उल्लेख है। मंदिर के भीतर एक जैन मूर्ति स्थापित की गई थी। टॉड के समय में राजपूताना के वाणिज्यिक और राजनीतिक जीवन में जैन धर्म का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। वे कहते हैं, "राज्य और राजस्व के अधिकारी मुख्य रूप से जैन धर्मावलंबी थे, जैसे लाहौर से लेकर सागर तक के अधिकांश बैंकर।[13]

उदयपुर शहर, जो मेवाड़ का प्रमुख नगर है, में कई महत्वपूर्ण जैन मंदिर स्थित हैं। इनमें सुनारिया जैन मंदिरऔरसिद्धाचल जैन मंदिरप्रमुख हैं।इन मंदिरों की वास्तुकला में जैन धर्म के विशेष स्थापत्य तत्वों को देखा जा सकता है, जैसे कि जटिल नक्काशीदार चंदन पत्थर की दीवारें और जटिल मूर्तियाँ।जैन धर्म ने मेवाड़ के समाज में अहिंसा, सत्य, और धार्मिक समर्पण की प्रमुखता को बढ़ावा दिया। इसके साथ ही, जैन समुदाय ने स्थानीय शिक्षा और सामाजिक सेवाओं में भी योगदान दिया। जैन धर्म के त्योहार जैसे कि पार्श्वनाथ जयन्तीऔर महावीर जयंती मेवाड़ में धूमधाम से मनाए जाते हैं, जो जैन धर्म की प्रासंगिकता को दर्शाते हैं। इस प्रकार, मेवाड़ में जैन धर्म ने धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और आज भी वहां के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है।

जैन मंदिर और तीर्थ स्थल

सुनारिया जैन मंदिर (उदयपुर)

सुनारिया जैन मंदिर की स्थापना प्राचीन काल में की गई थी, और यह जैन धर्म के अनुयायियों के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में जाना जाता है। मंदिर का निर्माण स्थानीय जैन समुदाय के सहयोग से हुआ था। यह मंदिर जैन धर्म की धार्मिक गतिविधियों और पूजा-अर्चना का केंद्र रहा है। यहाँ विभिन्न

[11]जैन, एस. (2015)।राजस्थान के जैन मंदिर: वास्तुकला और महत्व। मेवाड़ प्रकाशन, उदयपुर ।
[12]मेवाड़ के इतिहास, अध्याय XIX
[13]कुदैस्या, एम. (2022). भारत के व्यापारी समुदाय. ऑक्सफोर्ड रिसर्च इन साइक्लोपीडिया ऑफ एशियन हिस्ट्री।

जैन तीर्थंकरों की पूजा की जाती है, और यह क्षेत्र की धार्मिक परंपराओं का हिस्सा है। इसमें जटिल नक्काशी, उत्कृष्ट शिल्प और सुंदर स्थापत्य कला शामिल है। सुनारिया जैन मंदिर में नियमित रूप से जैन तीर्थंकरों की पूजा की जाती है। यहाँ विशेष पूजा, पंचामृत अभिषेक, और अन्य धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। मंदिर में महा तीर्थंकर महावीर जयंती, दस्ला, और अन्य जैन धार्मिक उत्सवों पर विशेष पूजा और समारोह होते हैं। इन अवसरों पर भक्त बड़ी संख्या में यहाँ आते हैं और धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेते हैं।

सिद्धाचल जैन : सिद्धाचल जैन मंदिर उदयपुर में स्थित एक महत्वपूर्ण जैन तीर्थ स्थल है, जो जैन धर्म के अनुयायियों के लिए एक प्रमुख धार्मिक केंद्र के रूप में जाना जाता है। यह मंदिर उदयपुर शहर की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा है और इसके धार्मिक अनुष्ठान और वास्तुकला इसे विशेष बनाते हैं। सिद्धाचल जैन मंदिर का निर्माण जैन धर्म के अनुयायियों ने स्थानीय समुदाय के सहयोग से किया था।[14] इसका निर्माण जैन धर्म की परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हुआ है। सिद्धाचल जैन मंदिर की वास्तुकला जैन धर्म की पारंपरिक शैली को दर्शाती है। इसमें जटिल नक्काशी, सुशोभित मूर्तियाँ, और विस्तृत चित्रण शामिल हैं, जो जैन धार्मिक कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।मंदिर में नियमित रूप से जैन तीर्थंकरों की पूजा और धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। यहाँ विशेष रूप से पंचामृत अभिषेक, ध्यान साधना, और अन्य धार्मिक क्रियाएँ आयोजित की जाती हैं।

चित्तौड़गढ़ जैन मंदिर: चित्तौड़गढ़, राजस्थान में स्थित एक प्रमुख जैन तीर्थ स्थल है[15]। यह मंदिर जैन धर्म के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र के रूप में जाना जाता है और चित्तौड़गढ़ किले के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य का महत्वपूर् चित्तौड़गढ़ जैन मंदिर का निर्माण जैन धर्म के अनुयायियों ने प्राचीन काल में किया था। यह मंदिर जैन धर्म की धार्मिक गतिविधियों और पूजा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। चित्तौड़गढ़ जैन मंदिर की वास्तुकला जैन धर्म की परंपरागत शैली को दर्शाती है। इसमें जटिल नक्काशी, अद्भुत चित्रण, और सुंदर मूर्तियाँ शामिल हैं, जो जैन धार्मिक कला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती हैं।

मेवाड़ में बौद्ध धर्म का विकास

मेवाड़ में बौद्ध धर्म का विकास और प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को समझने में महत्वपूर्ण है। हालांकि मेवाड़ क्षेत्र का इतिहास मुख्य रूप से हिंदू और जैन धर्म के प्रभाव से भरा हुआ है, बौद्ध धर्म का भी यहाँ कुछ हद तक प्रभाव रहा है। बौद्ध धर्म का विकास और प्रसार भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध काल में हुआ, लेकिन मेवाड़ में इसका प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित था।

[14]डॉ. उदय डोकरास, जैनमंदिर- भाग। - पूर्णसंग्रह- पुस्तक।
[15]शाह, यू. (2004)। राजस्थान के जैन मंदिर: एक सांस्कृतिक अन्वेषण। राजस्थान हिस्टोरिकल सोसायटी, जयपुर।

बौद्ध धर्म के प्रचार के शुरुआती दिनों में, विशेष रूप से अशोक के समय, बौद्ध धर्म ने व्यापक रूप से फैलने का प्रयास किया था, लेकिन मेवाड़ जैसे क्षेत्र में इसकी उपस्थिति सीमित रही। मौर्य साम्राज्य के सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और उनके द्वारा स्थापित स्तूप और वॉलेन की भूमिका रही। हालांकि, अशोक का शासन मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत में था, लेकिन उनके द्वारा भेजे गए मिशनरियों के माध्यम से बौद्ध धर्म का प्रभाव दक्षिणी राजस्थान जैसे क्षेत्रों में भी महसूस किया गया। मेवाड़ में बौद्ध धर्म के प्रभाव की पुष्टि के लिए आर्कियोलॉजिकल साइट्स और स्थापत्य अवशेषों की खोज की गई है। हालाँकि, बौद्ध धर्म के विशेष मंदिरों या स्तूपों का यहाँ व्यापक निर्माण नहीं हुआ, लेकिन क्षेत्र में कुछ कला और स्थापत्य तत्व बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाते हैं। मेवाड़ में कुछ बौद्ध स्थलों और स्तूपों की खोज की गई है, जिनमें साँवली का स्तूप प्रमुख है। बौद्ध धर्म के स्थापत्य तत्व और मूर्तियाँ यहाँ के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती हैं।

16वीं शताब्दी में मुगल शासकों ने मेवाड़ में प्रवेश किया, जिससे इस क्षेत्र में इस्लाम का आगमन हुआ। इस अवधि में हिंदू राजपूतों और मुस्लिम मुगलों के बीच एक जटिल संबंध देखा गया, जिसमें संघर्ष और सांस्कृतिक आदान-प्रदान दोनों की विशेषता थी। विशेष रूप से, राजपूत राजकुमारियों और मुगल सम्राटों के बीच विवाह गठबंधन ने संस्कृतियों के सम्मिश्रण को सुगम बनाया[16]। इस अवधि के दौरान ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती जैसे सूफी संतों ने प्रेम और सहिष्णुता के संदेशों को बढ़ावा देते हुए प्रमुखता हासिल की। उनकी दरगाहें (मकबरे) हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के लिए तीर्थ स्थल बन गईं, जो मेवाड़ में धार्मिक प्रथाओं की समन्वयात्मक प्रकृति का उदाहरण हैं[17]।

समकालीन मेवाड़ में, आधुनिक व्याख्याओं के साथ समृद्ध धार्मिक विरासत अभी भी पनप रही है। दिवाली, होली और मकर संक्रांति जैसे प्रमुख हिंदू त्यौहार भव्यता के साथ मनाए जाते हैं, जिसमें हज़ारों लोग शामिल होते हैं। उदयपुर में मेवाड़ महोत्सव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिसमें पारंपरिक संगीत, नृत्य और स्थानीय हस्तशिल्प का प्रदर्शन किया जाता है, साथ ही सामुदायिक बंधनों को मजबूत किया जाता है[18]। मेवाड़ का आधुनिक परिदृश्य सांप्रदायिक सद्भाव की दिशा में प्रयासों से भी चिह्नित है। अंतरधार्मिक संवाद को बढ़ावा देने वाली पहल सामने आई हैं, जहाँ स्थानीय समुदाय त्यौहारों के दौरान संयुक्त उत्सव मनाते हैं। मंदिर, मस्जिद और चर्च अक्सर एक साथ खड़े होते हैं, जो सह-अस्तित्व के

[16]खान, ए. (2017)। मध्यकालीन राजस्थान में सांस्कृतिक अंतःक्रियाएँ। अकादमिक प्रेस, नई दिल्ली ।

[17]सिंह, पी. (2020) । राजस्थान में अंतरधार्मिक संबंध: एक समकालीन विश्लेषण । यूनिटी प्रेस, दिल्ली ।
[18]मेहता, आर. (2021)। राजस्थान के त्यौहार: संस्कृति का उत्सव। हेरिटेज पब्लिशर्स, जयपुर ।

प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक हैं। "एकता सप्ताह" जैसे कार्यक्रम विश्वासों की विविधता का जश्न मनाते हैं और विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा देते हैं [19]।

परंपराओं की समृद्ध ताने-बाने के बावजूद, मेवाड़ को आधुनिकीकरण और शहरीकरण जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो पारंपरिक प्रथाओं को प्रभावित करते हैं। युवा पीढ़ी वैश्विक संस्कृतियों से तेजी से प्रभावित हो रही है, जिससे धार्मिक प्रथाओं के पालन के तरीके में अनुकूलन हो रहा है। हालांकि, पारंपरिक रीति-रिवाजों को संरक्षित करने के प्रयास जारी हैं, क्योंकि स्थानीय संगठन क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के लिए काम करते हैं[20]।

निष्कर्ष

मेवाड़ की धार्मिक संस्कृति एक जीवंत मोज़ेक है जो विविध आध्यात्मिक परंपराओं, ऐतिहासिक विरासतों और समृद्ध सांस्कृतिक प्रथाओं को एक साथ जोड़ती है। हिंदू धर्म, जैन धर्म और कुछ हद तक बौद्ध धर्म में गहराई से निहित, मेवाड़ भक्ति और कलात्मक अभिव्यक्ति के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का उदाहरण है। विष्णु, शिव और विभिन्न जैन तीर्थंकरों जैसे देवताओं के लिए इस क्षेत्र की गहरी श्रद्धा इसके परिदृश्य को दर्शाने वाले भव्य मंदिरों और पवित्र स्थलों में स्पष्ट है।

मेवाड़ राजपरिवार के संरक्षण और प्रभाव ने, विशेष रूप से महाराणा प्रताप जैसे शासकों के अधीन, इन धार्मिक परंपराओं को आकार देने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके समर्थन ने आध्यात्मिक प्रथाओं के उत्कर्ष और वास्तुशिल्प चमत्कारों के रखरखाव को सुनिश्चित किया है जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करना जारी रखते हैं।दिवाली, कृष्ण जन्माष्टमी और महावीर जयंती जैसे त्यौहार, जो अत्यधिक उत्साह के साथ मनाए जाते हैं, इस क्षेत्र की गहरी आध्यात्मिक जीवंतता और सांप्रदायिक सद्भाव को उजागर करते हैं। धार्मिक अनुष्ठानों और परंपराओं के प्रति निरंतर श्रद्धा न केवल मेवाड़ की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है बल्कि इसकी स्थायी आध्यात्मिक विरासत का प्रमाण भी है।

अंत में, मेवाड़ की धार्मिक संस्कृति एक जीवंत विरासत है जो इस क्षेत्र की ऐतिहासिक समृद्धि और आध्यात्मिक गहराई को दर्शाती है। इसके मंदिर, त्यौहार और स्थायी परंपराएँ न केवल दिव्यता का जश्न मनाती हैं बल्कि क्षेत्र के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास की झलक भी पेश करती हैं। भक्ति प्रथाओं और स्थापत्य वैभव के प्रतीक के रूप में, मेवाड़ भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण भंडार बना हुआ है।

[19]पटेल, डी. (2019) । राजस्थान में अंतर धार्मिक पहल: एक समकालीन परिप्रेक्ष्य । यूनिटी बुक्स, उदयपुर ।

[20]गुप्ता, आर. (2022)। राजस्थान में सांस्कृतिक विरासत और आधुनिकता। राजस्थान प्रेस, जयपुर।

संदर्भ सूची

1. "धर्म - मेरियम-वेबस्टर द्वारा धर्म की परिभाषा" । मूल से 12 मार्च 2021 को संग्रहीत किया गया। 16 दिसंबर 2019 को लिया गया।
2. ए.सी.बैनरजी, राजपूत अध्ययन, गुहिलोतों का प्रारंभिक इतिहास।
3. एर्स्किन, रापुटाना गजेटियर, खंड II A, पृ. 26-27 ।
4. ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ. 268 ।
5. काले, एम. (1990)। भर्तृहरि और भारतीय साहित्य पर उनका प्रभाव,साहित्य अकादमी, दिल्ली
6. कुदैस्या, एम. (2022). भारत के व्यापारी समुदाय. ऑक्सफोर्ड रिसर्च इन साइक्लोपीडिया ऑफ एशियन हिस्ट्री।
7. खान, ए. (2017)। मध्यकालीन राजस्थान में सांस्कृतिक अंतःक्रियाएँ। अकादमिक प्रेस, नई दिल्ली ।
8. गुप्ता, आर. (2022)। राजस्थान में सांस्कृतिक विरासत और आधुनिकता। राजस्थान प्रेस, जयपुर।
9. जैन, एस. (2015)।राजस्थान के जैन मंदिर: वास्तुकला और महत्व। मेवाड़ प्रकाशन, उदयपुर ।
10. डॉ. उदय डोकरास, जैनमंदिर- भाग I - पूर्णसंग्रह- पुस्तक I
11. पटेल, डी. (2019) । राजस्थान में अंतर धार्मिक पहल: एक समकालीन परिप्रेक्ष्य । यूनिटी बुक्स, उदयपुर ।
12. बनर्जी ए सी (1945) साईडलइटस ऑद हिस्ट्री ऑफ़ मेडिवल मेवाड़. प्रोसेडिंगग्स ऑफ़ डी इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 146-150
13. मेवाड़ के इतिहास, अध्याय XIX
14. मेहता, आर. (2021)। राजस्थान के त्यौहार: संस्कृति का उत्सव। हेरिटेज पब्लिशर्स, जयपुर ।
15. वेरगोटे, ए. (1996) धर्म, विश्वास और अविश्वास। एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन, ल्यूवेन यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 16
16. शर्मा, आर. (2012). मध्यकालीन राजस्थान: इतिहास और संस्कृति, राजस्थान हिस्टोरिकल सोसायटी, जयपुर।
17. शर्मा, वी. (2014). मेवाड़ में जैन धर्म और हिंदू धर्म: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।मेवाड़ संस्कृति संस्थान,उदयपुर।
18. शाह, यू. (2004) ।राजस्थान के जैन मंदिर: एक सांस्कृतिक अन्वेषण। राजस्थान हिस्टोरिकल सोसायटी, जयपुर।
19. सिंह, पी. (2016). "मेवाड़ की सांस्कृतिक पहचान: परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण।" इंडियन जर्नल ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर, 12(1), 78-85

20. सिंह, पी. (2020) । राजस्थान में अंतरधार्मिक संबंध: एक समकालीन विश्लेषण । यूनिटी प्रेस, दिल्ली ।